नागार्जुन के काव्य में मानवीय संवेदना

प्रीति शर्मा

नागार्जुन मानवीय संवेदनाओं के कुशल काव्यकार हैं। मानवीय संवेदना में संवेदना शब्द मुख्य है। संवेदना शब्द का शाब्दिक अर्थ है- किसी भी विपति या दुख-दशा में समान रूप से साथ देना। श्री रामचन्द्र वर्मा के अनुसार संवेदना शब्द का अर्थ है- ज्ञात या विदिन होना। अर्थात् शरीर में गरमी सरदी दुख सुख आदि का अनुभव होना ही संवेदना है परन्तु हिन्दी में यह प्राय: सहानुभूति के पर्याय के रूप में ही प्रचलित है मूलत: दोनों शब्दों का अर्थ किसी के वेदना या दुख को देखकर स्वयं भी वैसा ही अनुभव करना। संवेदना का युगबोध से घनिष्ठ रिश्ता रहता है। संवेदना आस पास के परिवेश, उसमें उत्पन्न हलचल में शामिल व्यक्ति की स्थिति, परिस्थिति और मन:स्थिति के आधार पर निर्मित होता है। संवेदनशील व्यक्ति जिस समाज में रहता है, उसमें घटित होने वाली घटनाओं से कभी भी अपने को पृथक नहीं रख सकता। किन्तु एक आम आदमी की तुलना एक कलाकार की संवेदना अधिक व्यापक, अधिक तीव्र और अधिक ग्रहणशील होती है। बाबा नागार्जुन का समूचा काव्य ऐसी ही मानवीय संवेदना से भरा पड़ा है। श्री धनजंय वर्मा का कथन इस सन्दर्भ में बड़ा ही सटीक बैठता है- ''उनका काव्य कोरे सौन्दर्य शास्त्रीय सरोकारों और कला दर्द से पीड़ित नहीं है वह वर्तमान से विक्षुब्ध और मानव भविष्य से चिन्तित है। मानवीय अस्मिता और गरिमा का वह सबसे प्रासंगिक बयान है।'' नागार्जुन के काव्य में समकालीन हर सामान्य जीवन का विविध धर्मी जीवन चित्र बड़े ही स्पष्ट रूप में देखने को मिल जाता है। उस जीवन चित्र में आशा आकांक्षा, दुख दर्द, हार जीत, सुख संतोष सभी रूप होते हैं। नागार्जुन स्वयं भी अपने को इस देश के बहुलांश से जुड़ा हुआ मानते हैं। वे कहते हैं कि शोषक और तानाशाह शक्तियों के खिलाफ जनमत करना मेरा पहला काम हो जाता है। संघर्ष के लिये जो प्रतीक मुखरित होते हैं, उन्हें उभारता हूँ ताकि रग रग में वह माहौल पैदा हो जाए। निश्चित रूप से नागार्जुन ने भारतीय जनजीवन के समग्र जीवन को अपनी कविताओं में स्पर्श किया है तथा कथा साहित्य में भी उसकी धडकन स्पष्ट रूप से सुनी जा सकती है। नागार्जुन की कविता की महत्ता उनके मानवीय सरोकारों के संदर्भ में है। स्वयं संघर्षो में पलने के कारण नागार्जुन का मन पर्याप्त मानवीय और संवेदनशील हो गया है। तभी वह मानवीय संवेदना को सच्ची एवं सार्थक अभिव्यक्ति दे पाये हैं-

काश तुम्हारी आँखों में भी, पड़ता वो ही गंगाजल। जिसकी खबरों से दुनिया में, मची आज भारी हलचल॥

नागार्जुन का कथा साहित्य हो या काव्य जगत्, नागार्जुन ने आम आदमी की यातना को स्पष्टता से चित्रित किया है, तथा किस प्रकार का रास्ता तय करके उस यातना से मुक्ति पाई जो सकती हैं, उस ओर भी दिशा निर्देश किया है। नागार्जुन का सम्पूर्ण काव्य मानवीय अनुभूतियों का काव्य है। मानव जीवन के सभी रूप वहाँ सच्चाई के साथ चित्रित हुये हैं। नागार्जुन का काव्य जीवन के विष और जीवन के अमृत दोनों में ही आकंठ सराबोर है। जीवन के विष को उसने भारतेन्दु और निराला की भाँति निर्विकार पिया और पचाया है, और अमृत: उसने दोनों हाथ से मनुष्यता के हित के लिये, कविता के रूप में उलीचा है।

नागार्जुन ने एक निर्धन घर में जन्म लिया था। गरीबी क्या होती है, इसे उन्होंने अत्यन्त निकटता से देखा था, अत: नागार्जुन की कविता में सुविधा विहीन लोगों के प्रति जो सहानुभूति का भाव मिलता है, वह सहज एवं नैसर्गिक हैं, ऊपर से ओढा हुआ नहीं है। डॉ. शिवकुमार मिश्र लिखते हैं- मुक्तिबोध के साथ वे अकेले रचनाकार हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन के कटु और भयावह यथार्थ की मलिन छाया भी अपने कृतित्व पर पड़ने दी है। व्यक्ति के रूप में जितने गहरे और मर्मान्तक दुखों को उन्होंने भोगा हैं, रचनाकार के रूप में मनुष्य और जीवन के प्रति उतनी ही गहरी और प्रशस्त आस्था का परिचय उन्होंने दिया है।

नागार्जुन ने अपने बारे में अपनी कविताओं में बहुत कम लिखा है, पर कहीं कहीं प्रसंगानुकूल कुछ लिखा भी है-

लेखनी ही हमारा फार। धरा है पट, सिन्धु है मसिपात्र। तुच्छ से अति तुच्छ जन की जीवनी पर हम लिखा करते कहानी, काव्य, रूपक, गीत। क्योंकि हमको स्वयं भी तो तुच्छता का भेद है मालूम। कि हम पर सीधे पड़ी है गरीबी की मार। सुविधा प्राप्त लोगों ने सदा समझा हमें भू भार॥

नागार्जुन ने अनेकों व्यंग्य कविताएँ लिखी है और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की खुलकर परतें उघाड़ी है। वर्तमान में राजनीति के लोग अपने अपने स्वार्थ लाभ के अनुसार व्याख्या करते हैं, यानी कोई राजनीति में सभी कुछ जायज है सभी कुछ चलता है, कहकर कोई

प्राध्यापक हिन्दी, एस.एस. जी. पारीक पी.जी. कॉलेज, जयपुर

व्यक्ति जो चाहे सो करे, दुनिया को बेदाग दिखे लेकिन मानवता के सेवक नागार्जुन को यह सब कुछ नहीं सुहाता। वर्तमान के अधिकांश राजनेता स्वार्थी, धूर्त, नैतिक रूप से पतित भी होते हैं। वे नागार्जुन के श्रद्धेय बापू का नाम केवल बोट बटोरने के लिये करते हैं। नागार्जुन इस षडयंत्र से अवगत करवाना चाहते हैं–

बेच बेचकर गाँधीजी का नाम बटोर वोट हिलावो शीश निपोडो खीस बैंक बेलेन्स बढ़ाओ

राजघाट पर बापू की वेदी के आगे अश्रु बहावो...।

नागार्जुन यथार्थवादी कवि हैं। जो देश मेहनत मशक्कत करने के बावजूद अपनी जनता का पेट नहीं भर पाता, नागार्जुन उस देश से मुक्ति चाहते हैं। वे उस देश को नरक से कम नहीं मानते।

शीघ्र मुक्ति दो इस रौख से जहाँ न भरता पेट, देश वह कैसे महान्।

उनकी कविताएँ दिल पर चोट करती हैं कर्तव्य बोध भी कराती हैं, तथा इस बात का अहसास भी कराती है कि एक दिन इस देश की दलित और शोषित जनता अपनी बेड़ियाँ तोड़कर रहेगीं। नागार्जुन गहन संवेदना और व्यापक आयामों के कवि हैं। उनका प्रथम काव्य संग्रह युगधारा नाम से प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह की अधिकांश रचनाएँ नागार्जुन को शोषितों के पक्षधर ही सिद्ध करती है। संकलन की प्रसिद्ध कविताएँ भिक्षुणी, चन्दना,पाषाणी आदि में कवि ने नारी के प्रति हुए अन्याय व शोषण को मुखरित किया है।

नागार्जुन एक विद्रोही कवि रहे हैं, किन्तु वे उन विद्रोहियों में नहीं आते जिनका विद्रोह केवल कॉफी हाउसों में होता है। नागार्जुन मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति की अपनी एक अमिट पहचान छोडते है। नि:सन्देह नागार्जुन एक ईमानदार इंसान हैं जीवन में भी और रचना में भी। जो कुछ भी उन्होंने लिखा, उनका वह अपना भोगा हुआ दर्द है। अत: सीधी साधी भाषा में भी वह प्रभावित करता है। इसी भोगे हुये दर्द के साथ नागार्जुन ने मानवीय संवेदना को अपने काव्य में व्यक्त किया है।

सन्दर्भ

1. भाषा शब्द कोष सं. डॉ. रामशंकर शुक्ल
2. नागार्जुन : धनजयं वर्मा : प्रगतिशील लेखक संघ
3. युगधारा प. 49
4. साहित्य और सामाजिक सन्दर्भ पृ. 127
5. युगधारा (स्वदेशी शासक) पृ. 92-93